

मन के जीते जीत सवा

दैनिक

मुद्रण तारीख :- 27.09.2015

अंक-294

तारीख-28 सितम्बर, 2015, भाद्रपद शुक्ल पक्ष 15

सोमवार

उदयपुर

कुल पृष्ठ-2

मूल्य -1 रूपया

पृष्ठ-1

दे दो दर्शन विश्वेश्वर



काशी नाथ हे, करूँ मैं दर्शन आकर,
मन के सिंघासन पर आ बैठो,
मैं हूँ तुम्हारा चाकर,
टिका रखी त्रिशूल पर काशी,
यह तीरथ धाम तुम्हारा,
नंगे पाँव गंगा जल के,
कर आता कावड़िया प्यारा,
मुक्ति धाम कहते काशी को,
आया तुम्हारे दर पर,
मन के सिंघासन पर आ बैठो,
मैं हूँ तुम्हारा चाकर,
जो भी तुमने दिया मुझे है, मैं वोही सौंपने आया,
वारुणी ऐसी के संगम पर, मैं तुझे ढूँढने आया,
देदो दर्शन विश्वेश्वर मेरे सारे पाप भुला कर,
मन के सिंघासन पर आ बैठो,
मैं हूँ तुम्हारा चाकर।

रहीमन कहीन

रहीमन उजली प्रकृति को, नहीं नीच को संग।
करिया वासन कर गहे, कालिख लागत अंग।।
सज्जन पुरुषों को नीच के साथ से हमेशा बचना चाहिए।
नीच का साथ कुछ-न-कुछ दुःप्रभाव अवश्य छोड़ता है।
जैसे कालिक चढ़े बरतन को पकड़ने से हाथ काले हो जाते हैं वैसे ही दुर्जन का साथ बदनामी का दाग लगा सकता है।

दोहावली

कटु-वचनों की धार से, बने जीभ तलवार।
अच्छा है चुप ही रहें, बना मौन आधार।।
भावार्थ- हमारे अपने कटु वचन ही हमारी जीभरूपी तलवार बन जाती हैं। इसलिए अच्छाई इसी में है कि हम चुप ही रहें, हमारा आधार मौन हो जाए। भलाई भी इसी में है और नीति भी यही कहती है।
अमृत वचन - कटु वचनों में जीभ तलवार की धार के समान हो जाती है।

अस्थि-बंधन (लिगामेंट)

लिगामेंट और टैंडन (कण्डरा) आपस में जुड़े ऊतकों के फाइब्रस बैंड हैं जो हड्डियों से जुड़े रहते हैं। लिगामेंट्स दो या दो से अधिक हड्डियों को आपस में जोड़ते हैं और जोड़ों को स्थिर रखने में मदद देते हैं। टैंडन्स पेशी को हड्डी से जोड़ते हैं। वे भिन्न-भिन्न आकार के होते हैं और कुछ लचीले होते हैं।

कशेरुकाओं की पंक्ति में लिगामेंट्स प्रणाली, टैंडन्स और पेशियों के साथ मिलकर, रीढ़ को चोट से बचाने के लिए स्वाभाविक ब्रेस का काम करती है। लिगामेंट्स आराम और कामकाज के दौरान जोड़ को स्थिर रखते हैं। यही नहीं, लिगामेंट्स अत्यधिक खिंचाव या सिकुड़न से नुकसान को रोकते हैं।

रेलवे ने टिकट बुकिंग के समय में किया बदलाव



रेलवे यात्रियों के लिए एक बड़ी खुशखबरी है. ऑनलाइन टिकट बुकिंग के समय में रेलवे ने एक बार फिर बदलाव करते हुए इसे 15 मिनट के लिए बढ़ा दिया है। रेलवे की ओर से जारी सर्कुलर में इस बात की

जानकारी दी गई है।

रेलवे की ओर से जारी सर्कुलर के मुताबिक, ऑनलाइन टिकट अब 12.30 AM से 11.45 PM तक बुक किया जा सकेगा. पहले यह सुविधा साढ़े 12 बजे से साढ़े 11 बजे के बीच ही मिलती थी। नया नियम 20 सितंबर से लागू हो गया।

इसके साथ ही जिस स्टेशन से ट्रेन शुरू होगी वहां तत्काल काउंटर भी 12.30 AM से 11.45 PM के बीच खुले रहेंगे। इसके पहले रेलवे ने तत्काल टिकट बुकिंग के समय में बदलाव किया था और स्लीपर व एसी क्लास में टिकट बुकिंग के लिए अलग-अलग समय तय किया था, जिससे बुकिंग में यात्रियों को आसानी होने लगी।

अम्ल रोग (एसिडिटी) के घरेलू उपचार

1. एसिडिटी होने पर मुलेठी का चूर्ण या काढ़ा बनाकर उसका सेवन करना चाहिए। इससे एसिडिटी में फायदा होता है।

2. नीम की छाल का चूर्ण या रात में भिगोकर रखी छाल का पानी छानकर पीना चाहिए। ऐसा करने से अम्लापित या एसिडिटी ठीक हो जाता है।

3. एसिडिटी होने पर त्रिफला चूर्ण का प्रयोग करने से फायदा होता है। त्रिफला को दूध के साथ पीने से एसिडिटी समाप्त होती है।

4. दूध में मुनक्का डालकर उबालना चाहिए। उसके बाद दूध को ठंडा करके पीने से फायदा होता है और एसिडिटी ठीक होती है।

5. गिलास गुनगुने पानी में थोड़ी सी पिप्पी काली मिर्च तथा आधा नींबू निचोड़कर नियमित रूप से सुबह पीने से लाभ होता है।

6. सौंफ आंवला व गुलाब के फूलों का चूर्ण बनाकर उसे सुबह शाम आधा - आधा चम्मच लेने से एसिडिटी में लाभ होता है।

7. एसिडिटी होने पर सलाद के रूप में मूली खाना चाहिए। मूली काटकर उस पर काला नमक तथा काली मिर्च

छिड़ककर खाने से फायदा होता है।

8. जायफल तथा सोंठ को मिलाकर चूर्ण बना लीजिए। इस चूर्ण को एक - एक चुटकी लेने से एसिडिटी समाप्त होती है।

9. एसिडिटी होने पर कच्ची सोंफ चबानी चाहिए। सोंफ चबाने से एसिडिटी समाप्त हो जाती है।

10. अदरक और परवल को मिलाकर काढ़ा बना लीजिए। इस काढ़े को सुबह शाम पीने से एसिडिटी की समस्या समाप्त होती है।

11. सुबह - सुबह खाली पेट गुनगुना पानी पीने से एसिडिटी में फायदा होता है।

12. नारियल का पानी पीने से एसिडिटी की समस्या से छुटकारा मिलता है।

13. लौंग एसिडिटी के लिए बहुत फायदेमंद है। एसिडिटी होने पर लौंग चूसना चाहिए।

14. गुड़ केला बादाम और नींबू खाने से एसिडिटी जल्दी ठीक हो जाती है।

15. पानी में पुदीने की कुछ पत्तियां डालकर उबाल लीजिए। हर रोज खाने के बाद इस पानी का सेवन कीजिए। एसिडिटी में फायदा होगा।

दिमाग से सम्बन्धित रोचक तथ्य

1. जब आप जाग रहे होते हैं तब आपका दिमाग 10 से 23 वाट तक की बिजली उर्जा छोड़ता है जो कि एक बिजली के बल्ब को भी चला सकती है।

2. मनुष्य के दिमाग में दर्द की कोई भी नस नहीं होती इसलिए वह कोई दर्द नहीं महसूस नहीं करता।

3. हमारा दिमाग 75: से ज्यादा पानी से बना होता है।

4. आपका दिमाग 5 साल की उम्र तक 95: बढ़ता है और 18 तक

पहुँचते-पहुँचते 100: विकसित हो जाता है और उसके बाद बढ़ना रुक जाता है।

5. एक गर्भवती महिला के दिमाग के न्यूरॉन्स की गिनती 2,50,000 न्यूरॉन्स प्रति मिनट के हिसाब से बढ़ती है।

6. आप अपने दिमाग में न्यूरॉन्स की गिनती दिमागी क्रियाएँ करके बढ़ा सकते हैं क्योंकि शरीर के जिस भी भाग की हम ज्यादा उपयोग करते हैं वह और विकसित होता जाता है।

7. पढ़ने और बोलने से एक बच्चों का दिमागी विकास ज्यादा होता है।



मानव मन के बोल

(आत्मकथा)

✿ प्रभु का प्रसाद है नारायण सेवा ✿

बोली भाई साहब आपको कहा ही नहीं रात को दो बजे आपको दर्द अहसास हुआ वो हॉस्पिटल गई व रात को लक्ष्मी जी पधारे लक्ष्मी जी का जन्म हुआ आप पिताजी बन गये हो। मैंने कहा हे प्रभु बड़े भाग्य फिर हॉस्पिटल गये बिटिया जी बहुत धार्मिक बहुत सामाजिक फिर उस समय मेरे दुकान की रिडेक्स सर्विस।

तो दो तीन चार साल बाद अजमेर से फोन आया कमला जी को हॉस्पिटल ले गये हैं। आपको शुभ समाचार देंगे तीन दिन इन्तजार करते रहे शुभ समाचार का और बड़ी प्रसन्नता हुई जब प्रशान्त के रूप में पूर्व जन्म के योगी का जन्म हुआ।

मेरी माता जी सोहनी देवी जी को मेरे पूज्य पिता जी को कन्हैया लाल जी पोता व पोती प्राप्त हुए। ये ईश्वर की कृपा है।

पुनः कैंप की तरफ चलते हैं तो मैं निवेदन कर रहा था कि नमो अरिहन्ताणम नमो सिद्धाणाम का अर्थ है जिन्होंने अपने आप को जीत लिया संयम कर लिया। वाणी का संयम बुद्धि का संयम बल का संयम समय का संयम। ऐसी ही सिद्धो को मैं प्रणाम करता हूँ।

नमो आरियाणाम् मेरे आचार्य को प्रणाम करता हूँ। कौन आचार हमें दधिधि ऋषि प्राणी ऋषि पंतजली, ऋषि हमारे आचार्य जी बालगंगाधर तिलक हमारे आचार्य जी सुभाष चन्द्र बोस यही हमारे आचार्य जी हैं।

आपने देश को सब कुछ दिया,

देश आपको क्या देगा।

अपने आगे तेज रखने का शुभ नाम आपका लेगा।

इन महापुरुषों की जय-जय कार करे इन महापुरुषों का प्रणाम करे बार-बार 7 लाख हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को जिन्होंने देश को स्वाधिनता दिलाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। फांसी के फंदे पर लटक गये प्रणाम किया।

क्रमशः अगले अंक में ...

पौराणिक नगरी राजगीर तीर्थ

पौराणिक भारतीय ग्रंथ वायु पुराण के अनुसार मगध सम्राट बसु द्वारा राजगीर में 'यज्ञ' कराया गया था। उस यज्ञ में राजा बसु के पितामह ब्रह्मा सहित सभी देवी - देवता राजगीर पधारे थे। यज्ञ में पवित्र नदियों और तीर्थों के जल की जरूरत पड़ी थी। कहा जाता है कि ब्रह्मा के आह्वान पर ही अग्निकुंड से विभिन्न तीर्थों का जल प्रकट हुआ था।

उस यज्ञ का अग्निकुंड ही आज का ब्रह्मकुंड है। उस यज्ञ में बड़ी संख्या में ऋषि महर्षि भी आते हैं। पुरुषोत्तम मास, सर्वोत्तम मास में यहां अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति की महिमा है। किंवदंती है कि भगवान ब्रह्मा से राजा हिरण्यकश्यप ने वरदान मांगा था कि रात-दिन, सुबह-शाम और उनके द्वारा बनाए गए बारह मास में से किसी भी मास में उसकी मौत न हो।

इस वरदान को देने के बाद जब ब्रह्मा को अपनी भूल का अहसास हुआ, तब वे भगवान विष्णु के पास गए।

भगवान विष्णु ने विचारोपरांत हिरण्यकश्यप के अंत के लिए तेरहवें महीने का निर्माण किया। धार्मिक मान्यता

है कि इस अतिरिक्त एक महीने को मलमास या अधिक मास कहा जाता है।

वायु पुराण एवं अग्नि पुराण के अनुसार इस अवधि में सभी देवी-देवता यहां आकर वास करते हैं। इसी अधिक मास में मगध की पौराणिक नगरी राजगीर में

प्रत्येक ढाई से तीन साल पर विराट मलमास मेला लगता है।

जहां लाखों श्रद्धालु पवित्र नदियों प्राची, सरस्वती और वैतरणी के अलावा गर्म जलकुंडों, ब्रह्मकुंड, सप्तधारा, न्यासकुंड, मार्कंडेय कुंड, गंगा-यमुना कुंड, काशीधारा कुंड, अनंत ऋषि कुंड, सूर्य-कुंड, राम-लक्ष्मण कुंड, सीता कुंड, गौरी कुंड और नानक कुंड में स्नान कर भगवान लक्ष्मी नारायण मंदिर में आराधना करते हैं।

राजगीर में इस अवसर पर भव्य मेला भी लगता है। राजगीर में मलमास के दौरान लाखों श्रद्धालुओं की मौजूदगी में दिखती है गंगा-यमुना संस्कृति की झलक। मोक्ष की कामना और पितरों के उद्धार के लिए जुटते हैं श्रद्धालु। इस माह विष्णु पुराण ज्ञान यज्ञ का आयोजन करके सत्, चित्त व आनंद की प्राप्ति की जा सकती है।



सम्पादकीय

समय अपनी गति से निरन्तर चल रहा है या यह कहे कि वह तेज गति से भाग रहा है। निरन्तर गतिमान इस समय के साथ कदम मिलाकर चलने पर ही मानव जीवन की सार्थकता है। इसके साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चलने वाला व्यक्ति पिछड़ जाता है। पिछड़ना सफलता से दूर हटना है, उसकी ओर गतिशील होना नहीं।

जीवन में वही मनुष्य सफल है, जो समय के साथ चलता है। कुछ लोग तो ऐसे दूरदर्शी होते हैं, जो अपने आने वाले समय को पहले ही भाँप लेते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी योजना पहले ही बना लेते हैं तथा प्रत्येक कसौटी पर सफल होते हैं। मनुष्य को समय के साथ आगे बढ़ते हुए अपना काम पूरा करते रहना चाहिए। कल के भरोसे काम को छोड़ना समस्याओं को आमंत्रित करना है। जिस व्यक्ति ने समय की उपयोगिता को समझ लिया है, वह सफलता को अवश्य हासिल करता है।

प्रत्येक मनुष्य को अपनी दिनचर्या की समय सारिणी अथवा तालिका को बनाकर उसका पूरी दृढ़ता से पालन करना चाहिए। जिस व्यक्ति ने अपने समय का सही उपयोग करना सीख लिया, उसके लिए कोई कार्य असंभव नहीं है। कुछ लोगों को अकर्मण्य रहकर निठल्ले समय बिताना अच्छा लगता है। वे अकर्मण्यता और आलस्य को समय की कमी के बहाने छिपाते हैं। समय को जिन्दगी के समान माना गया है, कहते हैं कि अगर आप समय को बर्बाद कर रहे हैं तो जिन्दगी को बर्बाद कर रहे हैं, अगर आप समय का अच्छा प्रयोग कर रहे हैं तो अपनी जिन्दगी को अच्छा बना रहे हैं।

समय को भगवान की बनाई हुई इस सृष्टि में सबसे बलवान माना गया है, जब ये बदलता है तो इंसान को राजा से रंक और रंक से राजा बना सकता है। व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जिनसे उसके भाग्य का बनना और बिगड़ना तय होता है। अगर व्यक्ति ने समय की सही दिशा या गति को समझ लिया, तब तो वह सफल हो गया, अन्यथा उसके हाथ केवल असफलता ही लगेगी।

प्रकृति में प्रत्येक वस्तु का समय निश्चित है। यदि प्रकृति भी आलसी और अकर्मण्य लोगों की भांति कार्य करना बन्द कर दे तो सम्पूर्ण सृष्टि का समय चक्र बदल जाएगा तथा प्रकृति विनाश की ओर आरूढ़ हो जाएगी। यदि विद्यार्थी केवल परीक्षा के समय परिश्रम करेगा और शेष दिन आराम करेगा तो उसे वांछित सफलता नहीं मिल सकती। अतः हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का सबसे बड़ा नियामक घटक समय ही है।

भजन

हे शी में तो प्रेम-दिवाली मेरो दरद न जाणे कोय ।
घायल की गति घायल जाणे जो कोई घायल होय ।
जोहरि की गति जोहरी जाणे की जिन जोहर होय ।
सूली ऊपर सेज हमारी सोवण किस बिध होय ।
गगन मंडल पर सेज पिया की किस बिध मिला होय ।
दरद की मारी बन-बन डोलू बैद मिला नहिं कोय ।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी जद बैद सांवरिया होय ।
- मीरा बाई

कम्प्यूटर प्रशिक्षण का समापन



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से निःशुल्क चलाए जा रहे निःशक्तजनों के लिए विभिन्न प्रशिक्षणों के क्रम में 90 दिवसीय कम्प्यूटर प्रशिक्षण बैच का समापन हुआ। संस्थान निदेशक श्रीमती वन्दना अग्रवाल ने विभिन्न राज्यों के पूर्वपोलियोग्रस्त 13 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। इस अवसर पर प्रशिक्षक राधिका सुथार व परियोजना प्रभारी यशोदा पणिया उपस्थित थे।

सत्यनारायण भगवान की पूजा का दिन - भाद्रपद पूर्णिमा

हिंदू कैलेंडर के अनुसार भाद्र महीने के पूर्णिमा के दिन भाद्रपद पूर्णिमा मनाई जाती है। भद्रा महीना श्रावन और कौर के बीच में आता है। भारत में यह महीना मॉनसून के खत्म होने के रूप में देखा जाता है। हिंदू कैलेंडर के हर महीने में एक पूर्णिमा और एक अमावस्या जरूर आती है।

हिंदू पौराणिक कथाओं में पूर्णिमा का बहुत ज्यादा महत्व है। और भाद्रपद पूर्णिमा की रात का तो उससे ज्यादा महत्व होता है।

भगवान विष्णु जी का महीना

भाद्रपद माह भगवान विष्णु के लिए विशेष माना जाता है। यही कारण है कि इस पूर्णिमा की रात को भगवान विष्णु जी की पूजा की जाती है। विष्णु के सत्यनारायण रूप की पूजा की जाती है।



सत्यनारायण बहुत से लोग भाद्रपद महीने के इस दिन पर अपने घरों में सत्यनारायण की पूजा करते हैं। ग्रह प्रवेश के लिये यह दिन बड़ा ही शुभ माना जाता है। भगवान सत्यनारायण के प्रसाद के रूप में फल, दूध, शहद और चीनी चढ़ाया जाता है और कथा सुनाई जाती है। अगर आपको सत्यनारायण की कथा में बुलाया जाए तो उसे कभी मना नहीं करना चाहिये

पवित्र स्नान

आप भाद्रपद पूर्णिमा के दिन किसी भी पवित्र नदी में स्नान कर सकते हैं। इससे आपको भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

दान पुण्य यह दिन दान देने के लिये बहुत अच्छा माना जाता है। माना जाता है कि पवित्र नदी में स्नान करने के बाद यदि आप जरूरतमंद को कपड़े, खाने और पैसे दें, तो आप को अच्छे कर्म हासिल होंगे।

कुण्डलिनी शक्ति

योग करने वाले यह मानते हैं कि योग के अभ्यास से अपने भीतर कुण्डलिनी शक्ति को जागृत किया जा सकता है। इस शक्ति को सांप का प्रतीक दिया गया है। आदि योगी शिव के सिर पर भी सांप प्रतीक के रूप में दिखाया जाता है जिस ओर इशारा करते हैं ये प्रतीक।

कुण्डलिनी की प्रकृति कुछ ऐसी है कि जब यह शांत होती है तो आपको इसके होने का पता भी नहीं होता। जब यह गतिशील होती है तब आपको पता चलता है कि आपके भीतर इतनी ऊर्जा भी है। इसी वजह से कुण्डलिनी को सर्प के रूप में चित्रित किया जाता है। कुण्डली मारकर बैठा हुआ सांप अगर हिले डुले नहीं तो उसे देखना बहुत मुश्किल होता है।

अगर आपकी कुण्डलिनी जाग्रत है तो आपके साथ ऐसी चमत्कारिक चीजें घटित होने लगेंगी जिनकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। कुण्डलिनी जाग्रत होने से ऊर्जा का एक पूरी तरह से नया स्तर जीवंत होने आता है और आपका शरीर और बाकी सब कुछ भी बिल्कुल अलग तरीके से काम करने लगता है।

ऊर्जा की उच्च अवस्था में समझ और बोध की अवस्था भी उच्च होती है। पूरे के पूरे योगिक सिस्टम का मकसद आपकी समझ और बोध को बेहतर बनाना है। आध्यात्मिक प्रक्रिया का मतलब आपकी ग्रहणशीलता को आपकी अनुभव क्षमता को बेहतर बनाना है क्योंकि आप उसे ही जान सकते हैं जिसे आप ग्रहण और अनुभव करते हैं। शिव और सर्प के प्रतीकों के पीछे यही वजह है। इससे जाहिर होता है कि उनकी ऊर्जा उच्चतम अवस्था तक पहुंच गई है। उनकी ऊर्जा उनके सिर की चोटी तक पहुंच गई है और इसीलिए उनकी तीसरी आंख खुल गई है।

खुल चुकी है तो इसका मतलब है कि समझ का एक और पहलू खुल चुका है। यह तीसरी आंख भीतर की ओर देखती है जिससे जीवन बिल्कुल अलग तरह से दिखता है। इसके खुलने का मतलब है कि हर वो चीज जिसका अनुभव किया जा सकता है उसका अनुभव किया जा चुका है। दुर्भाग्य की बाधा है कि ज्यादातर लोगों का प्लग इस ऊर्जा के स्रोत में नहीं जुड़ा हुआ नहीं है।

वे अपनी खुद की ऊर्जा पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं इसके लिए वे दिन में पांच बार खाते हैं फिर भी अकसर थके हुए रहते हैं। जीवन चलाना उनके लिए संघर्ष के जैसा है। हर कोई एक जैकपॉट पर बैठा हुआ है लेकिन सब गलत दिशा में देख रहे हैं। कुण्डलिनी आपके भीतर वह खजाना है जिसका अब तक इस्तेमाल नहीं हुआ है जिसका अब तक लाभ नहीं उठाया गया है। आप उस ऊर्जा का इस्तेमाल करके उसे बिल्कुल अलग आयाम में रूपांतरित कर सकते हैं एक ऐसे आयाम में जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते।

आज इंसान परमाणु विज्ञान की खोज में लगा हुआ है। परमाणु को आप देख भी नहीं सकते लेकिन अगर आप इस पर प्रहार करें इसे तोड़ दें तो एक जबर्दस्त घटना घटित होती है। जब तक परमाणु को तोड़ा नहीं गया था तब तक किसी को पता भी नहीं था कि इतने छोटे से कण में इतनी जबर्दस्त ऊर्जा मौजूद है। इसी तरह से इंसान भी एक जैविक परमाणु है जीवन की एक इकाई है। इंसान के भीतर भी वैसी ही जबर्दस्त ऊर्जा मौजूद है। कुण्डलिनी जागरण का मतलब यह है कि आपने उस अपार ऊर्जा के इस्तेमाल की तकनीक को पा लिया है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी - कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक - प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र, चौबीसा मार्गदर्शिका - कमला देवी, वन्दना अग्रवाल सहायक प्रबन्धक - सोहन लाल गाडरी संपादक - लक्ष्मीलाल गाडरी संपादन सहयोगी - घनश्याम सिंह राठौड़

तीसरी आंख का अर्थ यह नहीं है कि किसी के माथे में कोई आंख निकल आई है। इसका सीधा सा मतलब यह है कि आपकी समझ का एक और पहलू खुल गया है। दो आंखों से सिर्फ वही चीजें देखी जा सकती हैं जो स्थिर हैं। अगर मैं आँखों को अपने हाथों से ढक लूँ तो ये आँखें उसे नहीं देख सकतीं। ये इन दो आँखों की सीमा है। अगर तीसरी आंख



सादर आमंत्रण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् संवसारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

द्वारा आयोजित

श्रीमद् भागवत कथा

सहयोग

भागवत सेवा समिति एवं पाण परिवार, धामनोद

आयोजन तिथी 06 से 12 अक्टूबर 2015

स्थान : श्री बालाजी मन्दिर, धामनोद जिला-धार (म.प्र.)

समय : प्रातः 11.00 से दोप. 3.00 बजे तक

कथा व्यास : श्याम सुन्दर जी पौराणिक

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपाण कराएंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 9993983330

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

कैलाश "मानव" मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान	प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान	देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान
--	--	---	---

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी, कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।